International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 • Website: www.ijfmr.com • Email: editor@ijfmr.com

प्राचीन भारत इतिहास में परिधानों का बदलता स्वरूप

सैंधव सभ्यता काल से गुप्तकाल तक

सोनाली शर्मा

शोधार्थी, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर

---

1. सारांश - यह शोध पत्र प्राचीन भारत में परिधान के विकास की यात्रा को संक्षेपित करने का प्रयास करता हैं, जिसमें सैंधव सभ्यता से लेकर गुप्तकाल तक की वस्त्र परम्परा को समझने का प्रयास किया गया हैं। प्राचीन भारतीय इतिहास के कालक्रम में विभिन्न राजवंशो में हुए सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक तथा सामरिक परिवर्तन का प्रभाव किस प्रकार के वस्त्र संस्कृति पर पड़ा उसे विश्लेषित करने का प्रयास किया गया है।

2. मुल शब्द - परिधान, वस्त्र परंपरा, रेशा (सुती, रेशमी, ऊनी), प्राचीन भारत में वस्त्र, सैंधव से गुप्तकाल तक वस्त्र विकास

---

3. प्रस्तावना - प्राचीन भारत में वस्त्र केवल उपयोगिता का साधन मात्र न होकर एक किसी विशेष, विशेषण को धारित किए होते थे वस्त्रों के रंग, बनावट, वस्त्र निर्माण सामग्री और पहनने के तरीके से व्यक्ति विशेष की जाति, वर्ग, धार्मिक और राजनैतिक पहचान तक स्पष्ट हो जाती थी। विभिन्न प्रकार वस्त्रों कि विविधता के चयन से किसी वर्ग विशेष का उससे संबंधित होना ज्ञात होता हैं, जैसे मौर्यकाल में राजाओं, ब्राम्हणों, व्यापारियों और श्रमिकों में वस्त्रों में स्पष्ट भिन्नता दिखाई देती हैं। वही कुषाणकाल में भारतीय वस्त्र संस्कृति में विदेशी वस्त्रों के रूप में एक नया अध्याय जुड़ा तथा गुप्तकाल में इसी नए अध्याय का पुनः भारतीयकरण हुआ। प्राचीनकाल मं वस्त्रों के प्रकार में विविधता के साथ-साथ उनकी शुद्धि हेतु भी पृथक नियम प्राप्त होते हैं, जैसे मनुस्मृति के अध्याय 5 का एक श्लोक हैं -

"कोशोविकयोरूषैः कुतपानाकरिष्टकैः।

श्रीफलैरंशुपट्टानां क्षौमाणां गौरसर्षपै।।"

(मनुस्मृति श्लोक संख्या 229, पृष्ठ सं. 478)

अर्थात् रेशमी और ऊनी वस्त्रों को खारी मिट्टी से, कंबल को बेर से, अंशुपट्ट को बेल फल से और लिनेन वस्त्रों को सफेद सरसों से धोकर शुद्ध किया जाता हैं।

यह श्लोक दर्शाता हैं कि प्राचीन भारतीय समाज में न केवल वस्त्रों की उत्पत्ति पर ध्यान था बल्कि उनकी शुद्धि के लिए भी विशेष विधि निर्धारित थी।

3. शोध कार्य -

विभिन्न कालखंडो से प्रचलित वस्त्रों और परिधानों का विवरण निम्नलिखित हैं:-

1) सिंधु घाटी सभ्यता (2500-1500 ईसा पूर्व) में परिधानः-

प्राचीन विश्व की सबसे उन्नत सभ्यताओं में से एक सिंधु घाटी सभ्यता अपने नगरीकरण के लिए प्रसिद्ध हैं। इस सभ्यता में वस्त्र न केवल दैनिक जीवन का अंग थे बल्कि वे सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और धार्मिक जीवन में समावेशित भी रहें हैं। सिंघु घाटी के हड़प्पा नगर में सुती और रेशमी वस्त्र प्रचलन में थे। समान इसी प्रकार नगर मोहनजोदड़ो में भी सुती वस्त्रों का प्रचलन रहा हैं, इसके परिणाम स्वरूप वहाॅ से प्राप्त रंगीन कपड़े का टुकड़ा रंगाई की कला को प्रदर्शित करता हैं। तद्समय शिल्पित प्रतिमाओं में अल्पवस्त्र शैली प्रचलित थी। जिसके परिणामस्वरूप मोहनजोदड़ो से प्राप्त पुरातन प्रतिमा 'पुजारी राजा की मूर्ति पर कंधे पर शॉल और कमरबंद' का होना हैं। इसमें कमरबंद और शॉल सामाजिक परिवेशे को दर्शाता हैं। संभवतः प्रतिमा में प्रदर्शित व्यक्ति तात्कालिन समाज में प्रतिष्ठित वर्ग से संबंधित रहें होंगे।

नृत्यांगनाओं की मर्ति में भी हल्के वस्त्र और आभुषणों का प्रयोग दृष्टिगत् होता हैं तथा आभुषणों की उपस्थिति भी सामाजिक परिवेश की और इशारा करती हैं। सैंधव सभ्यता में वस्त्र उद्योग अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार रहा हैं। सुती और रेशमी कपड़े 'मैसापोटामिया और मिश्र' में निर्यात किए जाते थे इसके भी साक्ष्य प्राप्त होते हैं। सैंधव/हड़प्पा सभ्यता में सबसे आम प्रयुक्त रेशे कपास के रहें होंगे। हड़प्पा नगर के स्थलो से तांबा धातु की मोतियो के अंदर जंगली रेशम के तार पाऐ गऐ है तथा इन रेशम धागो के 2 उदाहरण प्राप्त होते हैं जो 2450 ईसा पूर्व से 2000 ईसा पूर्व के मध्यकाल के हैं। सैंधव सभ्यता में वस्त्र के साक्ष्य के विभिन्न स्थलों से भिन्न-भिन्न प्रकार के प्रमाण प्राप्त होते हैं, जैसे- 1) मोहनजोदड़ो से चांदी के 1 पात्र से कपास का धागा तथा कपड़े का एक टुकड़ा प्राप्त होता हैं। 2) हरियाणा के राखीगढ़ी स्थल

से 2500 से 2000 ईसा पूर्व के मध्यकाल के जले हुए कपास के वस्त्रों के पुरावशेष पाऐ गऐ हैं।

सैंधव/हड़प्पा क्षेत्र से रेशमी धागो के तीन नमुने प्राप्त होते हैं जिनमें 2 रेशम के तंतु और एक पूर्ण धागा जो लगभग 2200 ईसा पूर्व के हैं, हड़प्पा पाकिस्तान मंे 2200 से 1900 ईसा पूर्व के काल के सिरेमिक टुकड़े पर जूट के वस्त्र का छाप पाया गया हैं। लेकिन जुट के उपयोग के साक्ष्य साधरणतः सिंधु घाटी सभ्यता से खोजे गऐ अन्य स्थलों से भी प्राप्त नहीं होते हैं। इसलिए यह कहना उचित होगा कि सैंधव सभ्यता में जूट के वस्त्र का उपयोग होता था एक अनिश्चितता को दर्शाता हैं। हालांकि स्थानीय रेशेदार पौधो के उपयोग को नकारा नहीं जा सकता हैं। सैंधव सभ्यता से प्रमुखतः कपास अर्थात् सूती वस्त्रों का उपयोग दैनिक जीवन में बहुतायत रूप में किया जाता था वहीं रेशमी वस्त्रों के साक्ष्य उपलब्ध होते हैं परंतु सिमित मात्रा में उपलब्ध हैं तथा रेशमी वस्त्रों का उपयोग संभवतः धनी वर्ग या विशेष कार्य हेतु जैसे धार्मिक या राजकीय कार्यो के लिए किया जाता रहा होगा यह कहना अनुचित नहीं होगा।

2) वैदिक काल (1500 से 1000 ईसा पूर्व) में परिधान-

वैदिक काल 1500 से 1000 ईसा पूर्व भारतीय सभ्यता का एक महत्वपूर्ण कालखंड था, जिसमें वस्त्र न केवल शारीरिक आवरण नहीं बल्कि सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और आर्थिक जीवन का परिचायक थे। इस काल में सूती और ऊनी वस्त्रों के प्रमाण प्राप्त होते हैं। इस काल में वस्त्रों का प्राकृतिक रंगो जैसे नील, हल्दी और मजीठ से रंगा जाता था। उच्च वर्ग द्वारा जंहा महीन सुती या रेशमी वस्त्र पहना जाता था वही सामान्य वर्ग सूती और ऊनी वस्त्रों का प्रयोग करते थे। इस काल के वस्त्रों मंे वास, अधिवास या उत्तरीय, प्रावार, निवास, अत्क प्रमुख थे। इनमें से वास आंतरिक पहने जाने वाला, पुरूषों द्वारा कमर पर लपेटा जाने वाला वस्त्र था वहीं अधिवास व उत्तरीय बाहरी शरीर को ढंकने के लिए प्रयोग किया जाता था। जैसे चुनर। प्रावार संभवतः जाड़े के मौसम में उपयोग हेतु वस्त्र हुआ करता था, जो ऊनी या मोटे कपड़े से बुना हुआ होता था। इसके अतिरिक्त निवास विशेषतः लिंग आधारित वस्त्र आवरण हुआ करता

था जो स्त्रियों द्वारा कमर के नीचलें हिस्से में आधुनिक स्कर्ट या धोती जैसी पोशाक के रूप में धारण किया जाता था वहीं अत्क वर्ग विशेष द्वारा धारण किया जाने वाला आवरण चिन्हित होता हैं जिसे राजाओं और पुरोहितों द्वारा धारण किया जाना प्राप्त होता हैं।

3) मौर्य काल (321 ईसा पूर्व- 185 ईसा पूर्व) में परिधान -

मौर्यकाल, प्राचीन भारतीय इतिहास का वह महत्वपूर्ण चरण था जो, राजनितिक एकीकरण, व्यापार और सांस्कृतिक समृद्धि से तो उन्नत था ही, साथ ही इसने वस्त्र संस्कृति को भी समृद्ध किया। इस काल की विशेषताओं यथा भव्यता, विदेशी प्रभाव और सामाजिक भिन्नता ने परिधान के इतिहास को भी प्रभावित किया। अर्थशास्त्र के अनुसार, सुती, रेशमी और ऊनी वस्त्रों का निर्माण और व्यापार मौर्यकाल में प्रमुख था। लिंग-तदस्थ परिधान जैसे अंतरीय और उत्तरीय प्रचलित थे। चंद्रगुप्त मौर्य और अशोक के काल में ईरान, युनान, मिस्त्र और मध्य एशिया से संबंध विकसित होने के परिणामतः ईरानी, युनानी और मध्य एशियाई वस्त्र शैलियों का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है जैसे ईरानी प्रभाव से लहरदार ऊनी वस्त्र, चुस्त चोगा, युनानी प्रभाव से कमरबंध पटका और हल्के वस्त्र वहीं मध्य एशियाई प्रभाव से पगड़ी, पट्टीनुमा लंबा टोपियॉ और भारी चोगों का उपयोग दिखाई देता हैं। इस काल में परिधान में दृष्टिगोचर होती हुई विविधता इस पक्ष की और संकेत करती हैं कि, वस्त्र न केवल शारीरिक आवरण मात्र हैं बल्कि वह समाज के विभिन्न पक्षो को प्रभावित करती हैं। अर्थशास्त्र मं सूत कातने, बुनाई, रंगाई करने और वस्त्र निर्माण प्रक्रिया का निरीक्षण करने हेतु एक विशेष अधिकारी सूत्राध्यक्ष का वर्णन ज्ञात होता हैं। वस्त्र निर्माण मानक गुणवत्ता और वर्ग विशेश के अनुसार तय था।

प्राचीन रोमन इतिहासकार प्लिनी ने भारतीय सुती वस्त्रों की गुणवत्ता कोमलता और पारदर्शिता को चिन्हित करते हुए बुनी हुई हवा (वुवन विंड) कहॉ हैं।

4) कुषाण काल (प्रथम ईस्वी से 375 ईस्वी) में परिधान -

मध्य एशिया से आए कुषाण शासको ने भारतीय उपमाहाद्वीप में विदेशी वस्त्र शैलियों विशेषतः सीले हुए वस्त्रों और ऊनी परिधान को लोकप्रिय बनाया इससे पूर्व सिलाई युक्त

परिधान का प्रचलन सीमित मात्रा में था। गांधारकला और मथुरा कला, कनिष्क की मूर्ति और मूर्तिकला में दृष्गिोचर होता चोगा, लंबे आस्तिन वाले अंगरखे तथा पायजामें इस युग की वस्त्र संस्कृति के प्रतिबिंब हैं।

5) गुप्तकाल (320 ईस्वी से 550 ईस्वी) में परिधान -

गुप्तकाल को प्राचीन भारत का स्वर्ण काल कहां जाता हैं, इस युग में वस्त्र परिधान केवल आवश्यक वस्तु नहीं, बल्कि कला, धर्म और सामाजिक गरिमा का प्रतिबिंब बन चुके थे। कुषाण काल के विदेशी प्रभाव में आई वस्त्र संस्कृति अपने प्रारंभिक चरण में थी परंतु गुप्त काल में यह वस्त्र संस्कृति में विदेशी प्रभाव मात्र उनके बनावट तक ही समिति रहा अब विदेशी बनावट के साथ भारतीय वस्त्र शैली की सजावट और अलंकरण उनमें उन्नत रूप में सम्मिलित हो गया जैसे अलंकृत अंगरखे, सजावटी कंचुकी और सजावटी पटका इस प्रकार से गुप्तकाल में परिधान पर सुनहरे या स्वर्ण धागो से भिन्न प्रकार का अंलकरण किया जाने लगा। गुप्तकाल में सिलाई-कटाई न किए गऐ वस्त्र आम जन में लोकप्रिथ थे महिलाआऔं में घाघरा/लहंगा जैसे परिधानों का प्रचलन बढ़ा। उच्च वर्ग में रेशमी कॉलर वाले वस्त्र, लंबी आस्तिनों वाले अंगरखे या कोट, और सजावटी किनारियों वाले वस्त्र प्रचलित थे ये वस्त्र राजकीय समारोह, दरबारियों और धार्मिक आयोजनों में विशेष रूप से धारण किए जाते थे।

सिलाई युक्त वस्त्र राजसी प्रतिष्ठा का प्रतीक थे। गुप्तकाल के वस्त्रों में नारी सौंदर्यबोध, अभिजात्यता और सामजिक स्तर के अंश समाहित थे, यह युग वस्त्रों की शैली और प्रस्तुति के लिहाज से प्राचीन भारत की सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का परिचायक था।

निम्नलिखित वर्णित विभिन्न कालक्रम अनुसार परिधानों का बदलता तुलनात्मक विवरण:-

काल	वस्त्र का प्रकार
सिंधु घाटी सभ्यता	कमरबंध (कमर का लपेटा जाने वाला वस्त्र) सिर पर ओढ़नी, स्कर्टनुमा वस्त्र, सामने की और गिरती पट्टी
वैदिक काल	वास, उत्तरीय, निवास, प्रावार, अत्क
मौर्यकाल	अंतरीय, उत्तरीय, कंचुक, पटका
कुषाणकाल	चोगा, लंबी आस्तिन वाले कोट, पायजामा
गुप्तकाल	अलंकृत, अंगरखा, कुतर्क, कंचुकी

काल	सिंधु सभ्यता	वैदिककाल	मौर्यकाल	कुषाणकाल
रेशा या सामग्री	मुख्यतः कपास	उन, कपास	कपास, रेशम, उन	उन, रेशम
वस्त्र शैली	बिना सिले, शरीर पर लपेटा जाता था	ढीले बिना सीले, धार्मिक रूप से धारण	सीमित रूप में सिले हुए	ईरानी, मध्य एशियाई शैली, सिले हुए
विदेशी प्रभाव	नहीं	नहीं	युनानी, ईरानी (पटका, चोगा)	ग्रीक, पार्थियन, स्किथियन
सामाजिक भिन्नता का प्रभाव	नगण्य	वर्ण व्यवस्था अनुसार भिन्नता	स्पष्टतः वर्गानुसार वस्त्र	सैनिक, राजकीय, आमजन में स्पष्टतः भिन्नता

निष्कर्ष:-

प्राचीन भारतीय वस्त्र उद्योग न केवल तकनीकी रूप से उन्नत था, बल्कि यह सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक रूप से भी अपनी पृथक कहानी गढ़ता हैं। यह शोध इस उद्योग की सांस्कृतिक महत्व, वैश्विक पहचान और आधुनिक टिकाऊ फैशन के लिए इसकी प्रासंगिकता को चिन्हित करता हैं। यह कार्य प्राचीन भारत की समृद्ध विरासत का समझने और आधुनिक समय में इसके अनुप्रयोग की संभावनाओं को तलाशने में संभवतः योगदान देगा साथ ही सैंधव सभ्यता से लेकर गुप्तकाल तक परिधान के परिवर्तित व विकसित होते रूपों को भी जानने में मदद करेगा।

---

6. संदंर्भ ग्रंथ सूची:-

1. Alkazi Roshen, " Ancient Indian costume", National Book trust india, 1993, pp. 4, 60-63, 90-95.
2. Khosal, Sarala, "Gupta civilization", Intellectual publishing house new delhi, 1982 pp. 34
3. Guru ramratan, Saini ushma, Rani Jyoti, "To study on Famous ancient tradition Indian costumes and textiles", crimson publishers, TTEFT. 00689. 2023 pp. 955-957.
4. JHA Ganganatha Mahamahopadhyaya, "manu-smriti with the mabhasya of medhantithi", the Asiatic society of Bengal, 1932, pp. 478
5. Kenoyer Mark Jonathan, "Ancient tetiles of the indis valley region", Tana bana the woven soul of Pakistan, N Bilgrami Koel publication Karachi, 2004, pp. 2-3, 19.
6. Bothra Neha, Gupta Saloni, "Legacy and luxury of Indian cotton textile industry : from the lens of Indian knowledge system", Journal of textile Association, 2004, pp. 311, 312, 314
7. Bhardwaj Pankaj, "Unarveling the threadsa of the indus valley civilization : A study of textiles and their chronology", Journal of emerging technologies and innovative research vol. 11, 2024. Pp. pf 328
8. विद्यालंकार प्राणनाथ श्रीयूत, "कौटिल्य अर्थशास्त्र का सरल और सारगर्भित हिन्दी अनुवाद", प्रकाशक मोतीलाल बनारसी दास, १९२३, पृसं ३१४

9. National council of education research and training, "Art of the indus valley", An introduction to the indian art part 1, class 11 ncert, 2008, pp. 10-17 https://ncert.nic.in.textbook.php?lefa 1=2-10

10. Indira Gandhi National open University, " Fundamentals of fashion design, BFD-001, IGNOU, 2011.

11. Ministry of culture, government of india. "History of clothing in Ancient India", indian culture portal from indianculture.gov.in https://indianculture.gov.in/timeless-trends/history-clothing-ancient-india

12. Ministry of culture. Government of india, "Textiles and Fabrics in ancient india" Indian culture portal from indianculture.gov.in https://indianculture.gov.in/node/2730142

13. Das anushka, "History of the indian textile industry" https://www.iiad.edu.in/the-cirle/history-of-the-indian-textile-industry

14. Chowdhury srimoyee, "Ancient Indian textiles that outlived fast fashion by 2000 years" https://www.thebetterindia.com/465358/ancient-textiles-vs-fast-fashion

15. Suradakar neha, chanana bhawana, "Ancient drapes to modern syatements: a comprehensive study of gender neutral fashion in india", research gate, 2024, pp. 1-5.